विद्युत सागर में बिजुत के लिये कम पानी उपलब्ध होने और सतपुड़ा से मध्य प्रदेश द्वारा राजस्थान को पूरा हिस्सा न देने के कारण स्थिति बद से बदतर हो गई है।

दूसरी ओर कोटा अणु बिजलीघर की प्रथम इकाई 4 मार्च, 1982 से बन्द है। केन्द्र सरकार उसे सुधारने में अब तक असफल रही है। राजस्थान की प्रतिदिन आवश्यकता 210 लाख यूनिट के बदले में 80 से 90 लाख यूनिट बिजली प्राप्त हो रही है। प्रान्त के सभी उद्योगों में शत-प्रतिशत कटौती कर दी गई है। कृषि प्रयोजन के लिए 2-3 घंटे प्रतिदिन बिजली मिल रही है। पीने के पानी का संकट विशेषत: राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र बाड़मेर, जैसलमेर एवं जोधपुर में गंभीर रूप धारण कर रहा है। उद्योग एवं कृषि के क्षेत्र में राज्य के उद्योगपतियों और किसानों को करोड़ों रुपयों की हानि हुई है।

अत: केन्द्र सरकार से आग्रहपूर्वक निवेदन है कि वे तुरन्त से तुरन्त अणु बिजली घर कोटा की दोनों इकाईयों को ठीक करावें और कोटा थर्मल प्लांट की प्रथम एवं द्वितीय इकाई को ठीक कराने में अपना सक्रिय सहयोग दे और सिंगरौली सुपर थर्मल प्लान्ट से अपने रिजर्व का पूरा हिस्सा और बदरपुर से अतिरिक्त बिजली और मध्य प्रदेश सरकार से सतपुड़ा से राज्य का हिस्सा और सरप्लस राज्यों से राजस्थान को विद्युत दिलाकर विद्युत के संकट से पार करावें।

(iii) Incidence of Small-port in various districts of U.P. and in Ranchi and other places in Bihar and meed to take remedial measures immediately..

श्री चन्द्रपाल शैलानी (हाथरस) : माननीय उपाध्यक्ष जी, उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों तथा बिहार के रांची आदि अनेक स्थानों पर चेचक (माता) संक्रामक रोग की तरह फैलता जा रहा है जिससे सैकड़ों व्यक्तियों विशेषकर बच्चों की मृत्यु हो रही है। उ०प्र० के गोरखपुर देवरिया, बस्ती तथा लखनऊ के पास के इलाकों में फैली हुई इस भयंकर बीमारी की रोकथाम के लिए निकटतम ग्राम स्वास्थ्य केन्द्रों में दवाइयां उपलब्ध नहीं है। इस बिमारी के प्रकोप से पांच वर्ष तक की आयु के बच्चे सबसे अधिक प्रभावित हैं। चेचक की इस बीमारी की सूचना सम्बन्धित अधिकारियों को दे दी गई है किन्तु इसे रोकने का कोई उपाय अभी तक नहीं किया गया है। यदि इस रोग को रोकने की दिशा में तुरन्त कार्यवाही नहीं की गई तो इस रोग के और भी अन्य इलाकों में फैलने की आशंका है।

अत: मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह इस रोग पर तुरन्त काबू पाने के लिए शीघ्र से शीघ्र अपने चिकित्सा विशेषज्ञों को इस रोग से प्रभावित इलाकों में भेजकर जांच कराएं और इसे रोकने के लिए कारगर एवं ठोस कदम उठायें।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, चेचक इतनी भयंकर बीमारी है, जिसकी वजह से दो सौ से अधिक लोग मर चुके हैं। आपने इसको इतना लाइटली लिया है कि सिर्फ 377 के अन्तर्गत स्वीकृत किया है? इसको कालिंग अटेंशन में क्यों नहीं ले सकते ?

(iv) Need to take appropriate steps to increase production of pulses.

SHRI CHINTAMANI JENA (Balasore) : Sir; under Rule 377, I want to raise the following matter of urgent public importance.

In spite of the green revolution implemented by the Government, there has been a virtual stagnation in the output of pulses over the last ten years spanning two plan periods. Latest figures show that, the per hectare yield of pulses has remained at the same low levels as in the sixties. The production level of 13 millions tonnes achieved in 1975-76 has not been touched since then which resulted in the non-availability of main source of protien to the vast population. The *per capita* consumption has been declining from 50 gm. a day in 1976 to 38.4 gm in 1983.

The Agriculture Ministry concedes that pulses production has not been keeping pace with the advancement in technology and breakthrough in production in other cereals,